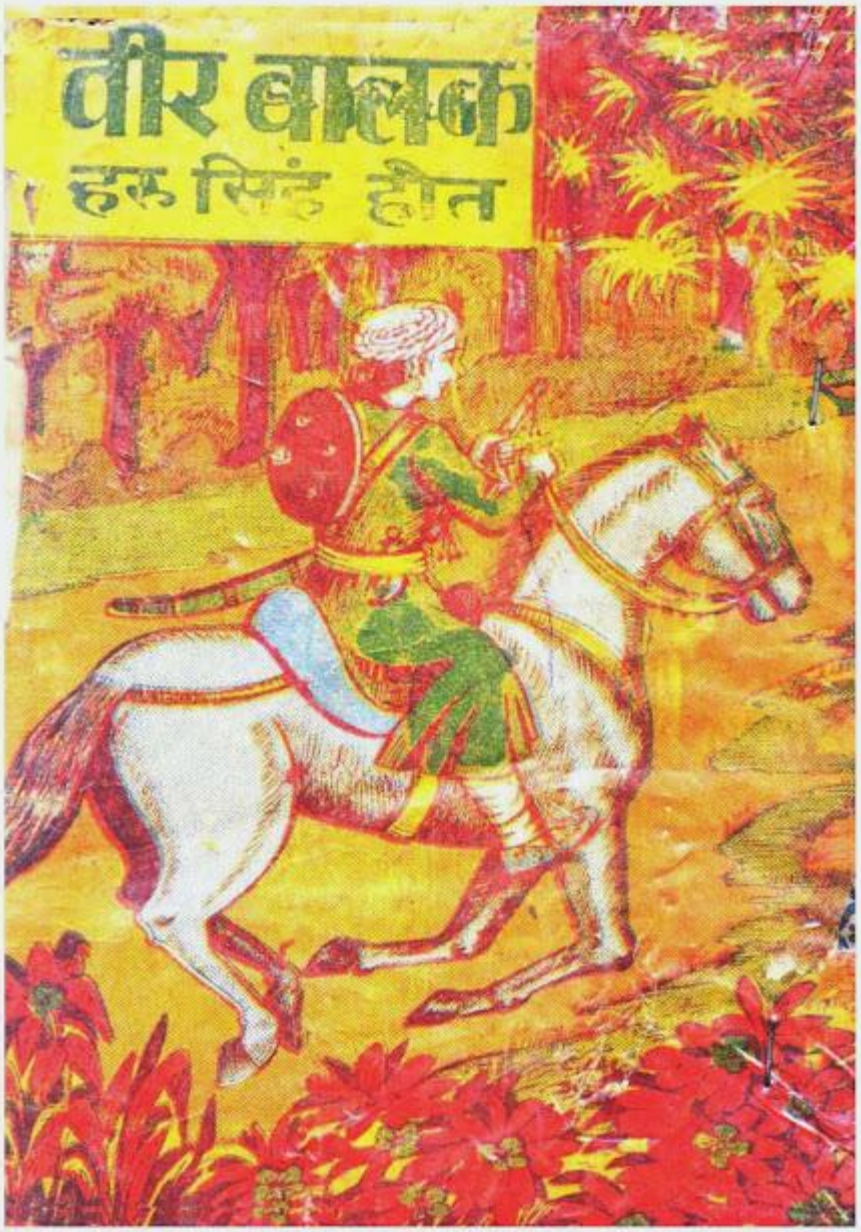

वीर बालक
हरु सिंह हौत

पहला अध्याय—कवि का वर्णन

समर सिंह के सात बेटों का हाल

पंचनाम देव तुम है जया दयाल।
मुरखा का दिल मज करिया उज्वल ॥
ईश्वर कौ ध्यान धरि उठानू कलम।
सब जग कैकी माँया जलम थलम ॥
धन धन हरि तुम विष्णु भगवान।
आधिनौ कौ लक्षणौ कौ दिया वरदान ॥
हृदय में बैठि जये सरस्वती माई।
गणेश ज्यु विघ्न हरि करिया सहाई ॥
धन धन हरि तुम धन तेरी माया।
कसा कसा ज्यला ह्या सदा कै निरथा।
सत्तर सौ नब्बे का मैं सुणानू यो हाल।
गोरखा लै जित जब अल्मोड़ा गढ़वाल ॥

तै बखतर समर सिंह गुज्डू कोट मज ।
सातु च्यला सात ब्वारी चार पट्टी रज ।।
तला पट्टी सल्ट मज समरू छी हीत ।
कस छी बखत भया किसी छी ओ रीत ।।
गुज्डू कोट मज छिय तैक वसनाम ।
चार दिन दुनिया में चले गया नाम ।
सात च्यला सात ब्वारी खूब झर पर ।
चार पट्टी मालिक छ कैकी निहै डर ।
कुणखेत बारैडा में कमैं खणी स्यरा ।
गुज्डू कोट मज हैरे अन धनैं ढेरा ।
भारी सुख चैन हैरी भारी छी सम्पत्ति ।
जब आनी बुरा दिन बैठी जैं कुमति ।।
सात च्यला समरू का मारी शूरवीर ।
आई गय अभिमान निल्यना खातिर ।।
सात बेटों का—आन जना लोगों की ओ लूटना रेशाला ।।
भलीभाली बाकरी कौ आई जाछा काला ।।
अण ब्याह चेलियों कौ ठाकुर चारौ खानी ।
वाट घट जैक भाल लै उघानी ।।
दुखियों का—अणियाँ जणियां लोग है गई हारन ।।
वटा घटा बन्द हैगी सुणौ भगवान ।।
हमारी पुकार न्हैजो ईश्वरा दरवार ।
गुज्डू कोट मज हैरौ कस अत्याचार ।।
सातै च्यला मरीजै ओ ब्वारी हैजों रानी ।
बिन वातै दुख दिची यसा अभिमानीं ।।

जग जग सब लोग दौब जन गाई।
टोटली है जाली कनी नाजैं कसी नाई ॥
तैबखता जर आया मुलुक तमान।
इलाका में फैली गया जादू की समान ॥
कुछ दिन मज सब भला हुई गया।
आखरी में जर जब गुजुडू कोट गया ॥
जर है कुंजर हैगी गुजुडू का कोट।
कैंमजी क्य द्रोष बाबू अपणी छी खोट ॥
जैकणी श्रो जर आनीं निऊठना ठाड़ा।
गुज्डू कोटं मज लेगे दुखियों की डाड़ा ॥
लीई गय अभिमान लींभय गरूर।
दुनिया की गाई बाबू लागीगे जरूर ॥
सात च्यला समरू का पड़िया रेगया।
बारी बारी पर भया हंसी ढूंग गया ॥
सातै दिन मज तब सातै च्यला मरा।
सातै ब्वारी रानी हैगी यस अया जरा ॥
साते च्यला मरीं गया एक ले निरय।
हाय करी समरू क कंठ रूकौ गया ॥
आठों दिन समरुवा स्वर्गवास हया।
छै मैहैंन हरू हींत पेट मुया रया ॥

—

एक छौ मेहड़ी हरूसात छै भौजिया।
देखण चहण मज मन का रौजिना ॥

भल मैंसों च्यलीं छिया खानी दानी घर ।
कसी जानी यथा उथा सरमें की डर ।:
हरुवा का नाम पर उमर काटनी ।
अन धन के निरय गेंठी क्योला खानी ॥
खानदानी घर छिय हई गई सेक ।
शूर वीर मरी गई हरु रय एक ॥
खीमानन्द कहणं छ घर लिया ध्यान ।
द्वी दिन वचण हय निकय गुमान ॥
जति शान्ति हली ओती ईश्वरी का वास ।
अभिमा करि गया बड़ौ बड़ी नास ॥
हमरो क्य गिनती हई देवों को निरई ।
गूज्ड़ कोट गर्मों लै कसी दसा भई ॥
द्वीये स्यरा बंजा हया बन्द है रकम ।
निरहैगे डर कैकी नै कैक हुक्म ॥
डर है निडर हैगो खुशी हया लोग ।
सात च्यला मरी गया उड़ी गय भोग ॥
महेणी भाजिया हल करनी पालन ।
जो पूछल दुशमन बताया लैं भन ॥
हरुका—चार पांच बरस क हरुवा है गय ।
पड़ण लिजायाँ तब स्कूल गय ॥
दिन भरि इसकूल दयाल कौछ खेल ॥
ननतिनों मज भयों पैली वटो मेल ॥
जस जेक काम हौछा उसैंड करनो ।
मछा रनी पाणी जज बच्चा लै तैरनो ॥

कबे होंछ दिवान वीक कवे हैछा सन्तरी ।
अफु होछ रज हरू ठाड़रों सन्तरी ॥
एक दिन एक नान बनै हैल चोर ।
हरूव हुक्म लैगो हात बांधों डोर ॥
कान लै पकड़ी वेर मारनी द्वी लात ।
आज बटि छोड़ी दिये चोरी की लै लत ॥
चोर जो वनाय बाबू तैंक नाम मोती ।
ऐसी बोली मारी वेले बात अण होती ॥
चोर—गरभै लै खाय कोछा सात भाई त्यरा ।
कार बार बन्द हय बांज हया स्यरा ॥
चार पट्टी जिमीदार निदिना रकम ।
डर है निडक हैगो न कैक हुक्म ॥
तब कौला च्यलो छै तु उधालै रकम ।
स्यर लै आबाद कलै दिद्यलै हुक्म ॥
चौद सालैं उमर छी हरुवैं की तब ।
बदन में आग लैगे बोली मारी जब ॥
हरु का...एक दिन न्हैगो हरू महेड़ी का पास ।
हाथ जोड़ी कोछ इजा अरज छ खास ॥
खेती ममै कती खछी सात भाई म्यरा ।
कतीं लै इलाक म्योर कती मेरा स्यरा ॥
भेद भन छिपये तू सांची कये बात ।
भेद जै छिपाली इजा कौला जीव घात ॥
माता का—यतु बात सुणी मां कौ हिय भरि आय ।
को हनव दुश्मर भेद जो बताय ॥

निबतानू मैं जब य बड़ौ हटिल ।
बजरे की छाती करी समझाया ॥
तिकणी कराय च्यला नौरमल पास ।
काला दिनो याद करी मैं लागू निसास ॥
कुणखेत बौरणा में कमै खणी स्यरा ।
घार पट्टी मज च्यला जिमीदार त्यरा ॥
जै महेनौ छिय च्यला सातै भाई मरा ।
बाज्यू तेरा मरी गया छुट कारबार ॥
उदिन बै खेती बांजीं बन्द है रकम ।
निरहैगे डर कैकी न कैको हुक्म ॥
हरू का—इन बातों सुणि हरु उठिगो जहर ।
गुस में भरिगो हरु बाल झर झर ॥
आज तक निबताय इजा त्वीले बात ।
ऐसो बात सुणीं मेरो जली गोछ गात ॥
मैंत जान् मेरी इजा चारौ पट्टी मज ।
किलक रकम रुकी क्यछ मन मज ।
एक हाथ ढाल थाम एक तलवार ।
जीन थरी घोड़ी मज है गयो सवार ॥
हरुवै की घोड़ी न्हैगे क्वस्यां नबा मज ।
जिमीदारो कणि हरु धाद मारी तब ॥
चौद सालैं रकम व सब नत मारी जानू ॥
यति करौ जम सब नत मारी जानू ॥
स्यर म्यर बांज रय रकम लै बन्द ।
चाहे बेचो घर कुड़ी चाहे करौ चन्द ॥

रकम लै जम कवो स्यर लें आबाद ।
जगा जगा क्वस्र्या मज लगो हैछ धाद ।।
दूसरी ओ धाद मारो सल्ड तल्ला पट्टी ।
आज तक चुपै रैय लगतावें वटी ।।
मालकनौ समेत औ रकम लै ल्यावो ।
वौरड़ौ कों स्यर म्यरौ आवाद कै जावो ।।
हरुवा ओ होत न्हैंगो बसनाई फाट ।
या मानो हुकम मेरो न पूजानू घाट ।।
हरुवै की धाद सुणी हैगी भयभोत ।
कती वटो आछ कनी दुश्मन हीत ।।
जमींदारों का—कुदार क छोल भया आय कती बटी ।
इनुलै निखात दिब लगतावें बटो ।।
गौनू गौनू मज सब जम हुई गया ।
सबैं एक मत करी सुणौ म्यर भया ।।
रकम लौ मालकामू हत दैकी ठेकी ।
सैणी बल्द साथ जैंला इमजी छ नेकी ।।
घर घर मज सब बनै हैला रव्ट ।
सबासें त्रेकार लागौ रातें लागौ बट ।।
क्वस्तौं का ओ जिमीदार कुणखेत अया ।
सल्टीयों की बात सुणी लिया भया ।।
पैली बटी नामी हया सल्ट का सल्डिया ।
झड़डालू बड़ हया ठुला लै बल्दिया ।।
हलियो लै हल थामा सैंणियों लै बरा ।
ठुलाओ बव्दौ का त्राबू बाजिया नेवरा ।।

बोरड़ा का स्यरा मज रातै नसी गया ।
दैंकी ठेकी जम करी कार लागी गया ॥

हलिये ले हल बाय जेलणियां साथ ।
द्वीयँ स्तरा मज हैंरौ भारो सोमनाथ ॥

उज्याव हणम : हरू टुटि गेछ नीन ।
हाथ जोड़ी माता हणी हैंरछ आधीन ॥

ढया मजा जाई वेर देखि आनू स्यरा ।
आई कि निअया इजा जिमीदार म्यरा ॥

हरुका—ढया मज जाई वेर लागीगे नजर ।
द्वीय स्यरो सेणी मैंस लागी रई कार ॥

खुशी हई गय हरु आई घर घर ।
ध्वड़ मजि जीन धरी वादी ओ नेवर ॥

रेशमी कपड़ा पैरा पुतलिया पाग ।
ध्वण मज सवार हैगो बांसरी में राग ॥

कुणखेत स्जर न्हैगे हरुवैं की घोड़ी ।
सब भड़ स्यो लगानी हाथ जोड़ी जोड़ी ॥

खुशी हवैं न्हैगो बोरड़ा स्यरम ।
सल्टा क सल्टिया सब हई गया जंब ॥

जमीयारों का—सब भड़ स्यो लगानी हरुवा अणस ।
घोड़ी वे उतरी हरु बैंठिगो बीचम ॥

छोटा ठुला मैंस सैंणी जम हई गया ।
द्वी स्यरों का लोग सब बैंठि गया ॥

हरुका—खानदानी च्यला छिय कसो कोंछ बात ।
हाथ जोड़ा अरज छ नानी ठुला बात ॥

वहै गछा दुणें जया बुतो जया धान ।
भलौ है जो तुमरौ लै धरी गछा मान ।।
जतुक ऐरछा येती मेरों भाई बैणो ।
मैस जैला देर मजि बेरे जाओ रैंणी ।।
क्वे हनला यकलाओ कैकन नना तिना ।
उनर शराप भाई लागलौ आधिना ।।
सबै मैसों हणी हरु हाथ लै जोड़िया ।
अरज छ मेरी भाई मैं भैन छोड़िया ।।
अपण दिल की तुमू सुणानू फिकर ।
कथ बटि करी हालों ब्याऊ की जिगर ।।
सीदी सादी नानी हवौ घर खान दान ।
सात लै भौजिया घर मंहेणी समान ।।
आठुवां छ इजा मेरी बुढ़िया पुराण ।
सबौ को जो सेवा करो ऐसी हो बौराण ।।
ऐसी बात चोत हैरै बौराण स्यरमा ।
दुशमन नसी गय हरुवा घरम ।।
हरुवा भौजिया हैनी कसो कौछ बात ।
मेरी बात सुणी कौछ रानिओ ओ सात ।।
देवरा कारण काटो दिन रात ।
जिमोदारी हैती हरु ऐसी कौछी बात ।।
भल खान दान चेली जौक भल नाम ।
उरली बैठिया कौछा भौजि कैला काम ।।
जो मेरी बौराण हली रली सब सीर ।
सात जो भौजिया मेरा करीला खातीर ।।

ऊहली बौराण अब तुम लै नौकर।
तुमर रहणौ येती बड़ी छ बिकार ॥
भाभियों का—भौजियों लै सुणी जब दुश्मन बात।
गुस्सा मजि भरि बेर घालनी यो घात ॥
जै बौराणै भती ल्यायै बेरै हैजो रान।
झन खाण पये हरू द्वी स्यरों धान ॥
हिटौ दिदि भुली अब हम नसी जोंला।
हरुवा जै ब्याऊ कौंछा कलक रहोंला ॥
कमर बरति बांदी हत पर दाती।
सातै भौजि बट लागी बैठि गे कुमति ॥
बौराड़ा कुणखेत बटि सड़क में गया।
सड़क में जाई बेरा धोंस्यला लै गाया ॥

धोंस्यला

बकरै की कानी धम्मा धोंस्यला।
जै बौराणै भली ल्यालैं धोंस्यला ॥
बैरै हैजो रानि धम्मा धोंस्यला।१
पक्ये हैलौ मान धम्मा धोंस्यला ॥
झन खाण पये हरू धोंस्यला।२
हे सेरो का धान धम्मा धोंस्यला ॥
लट पटी लोड़ी धम्मा धोंस्यला।
येती बटी खाली न्हैजो धोस्यला।
हरुवै की घोड़ी धम्मा धोंस्यला।३
हरुवै की घोड़ी धम्मा धोंस्यला ॥

सात व भौजिया हरु करीगी चौपट।
घोंस्यला गैबेर अब लागो गया बट।
मिजातों में जानी तब मतवाली चाल।
अब सुणि लियो आखिला का हाल ॥
चातीखेत मज हैला द्वी भाई भैसिया।
हम धम नाम छिया बड़ँ पैंक छिया ॥
घर बटी धम गयो भैंसों की खबर।
लालू ठाट पर तैलै अड़्याई कमर ॥
तब तक आई गई सात यों भौजिया।
धमै लै खबर पुछी कतीक जणीया ॥
धमा को तुमरो सौरासी छा कां तुमरो मैत।
कबुघता उना ज छा घमीला छौं चैत ॥
बौराणी का यतु बात सुणी बौराणियां कनी।
गुजड़ू कोट हीतों बान सातै हैगौं रानी ॥
और सब मरी गयी एक छ देवर।
घागरा का खोज जानू तला ओ भावर ॥
हमारा लै दिन अब निकटना येतो।
तलाओ भावर जौला सब सुख जती ॥
धमा का यतु बात सुणी बेर तब कोंछा धम।
तिरिया अबल हई निरनी सजम ॥
न जाओ भावर तुम चैता का महोना।
घाम लागो बेर ओती ऐ जालौ अदीन ॥
जहां ज छा भावर वो हिटो मेरा घर।
भाबर जैबेर तुमू लागी चैला जर ॥

बौराणियों का साताओ बौराणी कनी सुणी लिया बात ।
देवर छ काल हरू हीत जौकी जात ।।
सुसी बेर हरूवैं लै करणी चौपट ।
सवों की मुनई सज भुटी जलौ भट ।।
धमा का यतु बात सुणी बेर तब कोंछ धम ।
कसी क भुटल भट हम जै छौ कम ।।
हरुवा जै येती आलौ निभुगुतौ जान ।
बादुला गिनुवा जस फैकुला असमान ।।
साब्बों का जाना यतु बात सुणी बेर सातै लौटि गया ।
धम का दगड़ा अब चानी खेत गया ।
चानी खेत मज खान्नो दै दुध पराई ।
हम कोंछ धम हैंती सुण मेरा भाई ।।
तीन सैणी तेरा बांट तीन मेरा हनी ।
एक सुवा बांकी रैगे उमेरो जेठुनी ।।
द्वी भाइयों बाट तब चानी खैत हया ।
आघिन की हरुवैं की बात सुणी लिया ।।
जिमीदार घर गया हरू गुज्डू कोट ।
खनखनाट ध्वण पड़ जब चाय गौठ ।।
घास पात के निंदेख न्है गया भतेरा ।
भौजिया कां गई इजा है गेछ अबेर ।।
कती गई मेरी इजा भौजिया ओ सात ।
धौ काटणो हैगे हरू फिकरै की रात ।।
पूरब उज्याई मज हरू हो तैयार ।
एक हाथ ढाल थामो एक तलवार ।।

मेंत जानू मेरो इजा भौजियों खोजण ।
क्या बात है गेछ आज जो रहैगी वण ।।
यात खाया स्यू बागै लै यात टूट पैड़ा ।
स्यू बागै बदल ल्यूला टुट हूणा ढाड़ा ।।
हरूवा ओ हीत ज्हैगो जंगलों जंगल ।
बांसुई खानम देखि भौजि घस्यरों दंगल ।।
हाथ जोड़ि हरू कौछ सुणौ मेरी बात ।
उन्हा उमां जानी देखी भौजि मेरा सात ।।
सैणी कनी सुणि लियो रज ज्यू हमरा ।
पर्त हम बतै द्युला लौटि जाओ घर ।।
सात ओ भौजिया न्हैगो भैंसियों का घरा ।।
चानी खेत मज हैला उनरा लै ड्यरा ।।
हम धम नाम हल पैक छ ऊ भारी ।
भन जया चानी खेत तुम दिला मारी ।।
यतु बात सुणी हरू टूटी गे कमर ।
के बतोंला इजा कणि कसी जानू घर ।।
धिकार छा मैंहणी लै लोटौं डरीक ।
आपु हणि भांस रय उमरा भरी ।।
डरपोक च्यलै लै आब कब लै बचणों ।
यात नाम मर्में जांणो या भल मरणों ।।
जस हलौ भुमुतुला भौजियो कारण ।
या ल्योल भौजियों कणी या द्यूला प्राण ।।
मार मार कने हरू चानो खेत गय ।
सोवा का थुपुड़ मज बैठी लक गय ।।

हथियार भी में धरा बात सुणी रय ।
थोड़ी देर मज तब हरूवै लै कय ।।
हरू का सुणि लियो मेरा भाई मैं माफ कै दिया ।
मेरो लै भौजियों कणि में कणि दिदियो ।।
यतु बात पड़ी गैंछ हमा का लै कान ।
को ऐ रौछा भौजि वाव फट लेगे दान ।।
हमा का भौजि वाव म्यर भुला को ऐरछ भ्यार ।
कान कें पकड़ी बेर फैंको कोसी पार ।।
यतु बात सुणी हरू उठिगो जहर ।
गुस्सा मज भरी बेर बाल झरैं झर ।।
हरू का भ्यार क्यलै निम्रना ओ निगुरा कुजाति ।
ठाड़ौ हई रयो मैंले खोलि रैछ छाति ।।
यतु बात सुणी बेर धम आई गय ।
द्वीयों का आपस मज अंग भिड़ गया ।।
धमा हरू का लड़ना हरुवा हीतक हय नौणियां बदन ।
धम पैक लड़ि गया भालू कस कना ।।
द्वीनूक है गया तब मल युद्ध भारी ।
गुस्सा मजा भरि बेर हरुवै लै मारी ।।
हरुवा मारण मज गिरि गोय धम ।
झट पट हरु तब बैठिगो छातिम ।।
हरुवै तागत देखी घबड़ाय धम ।
तिरियों कारण ददा मरी गय हम ।।
धमा का म्यार माग पार निछैं तिरिया लहणी ।
मेरी लै तरफ बटी सातै छै तेहणि ।।

यतु बात सुणी बेर हम न्हैगो भ्यार ।
एक दम लड़ि गयो कठें कसि चार ॥
हूम हरू लड़ि गया धम हों तैयार ।
हरु पर करि हैछ लट्ठ स्वटों मार ॥
तीन दिन तक रगो भारी घमसान ।
द्वीयों का दगड़ा लड़ि गिरी गो निदान ॥
हरू को मार देना बेहोश - हैगोय हरु पड़िरौ जमीन ।
हूम धम द्वीयैं भाई पड़ी गेछ नीन ॥
लाश पड़ी रैछ हरु हँस उड़ि योय ।
महेड़ी क पास जाय स्वीणा मजी कोय ॥
स्वप्न में माता से चानीखेत मरी गय भौजियां कारण ।
लाश पड़ी रैछ ओ नी उड़िगो पराण ॥
हूमा धमा साथ इजा तीन दिन लड़ी ।
भूख कारण इजा जमीन में पड़ी ॥
एक दिन मरण छा एक दिन काल ।
अपण त दुख गोय त्यर जनजाल ॥
आठ चंलला सैंती देर है गई अनाथ ।
कसो रौली गुज्डू कोट क्वे निरय साथ ॥
स्वीण मजी कैछ तब सतवन्ती माई ।
कयलै गय चानीखेत कय कुनति आई ॥
कसी भूख लागी च्यला जो हय निराश ।
वैंग धारी दूध च्यला ते पिलौला खास ॥
गोदी में बिठाई वेर छाती पै लगाय ॥
महेड़ी क दूध पिय पेट भरि आय ॥

जिन्दा होना स्वपना रणम हरू पेट भरि गोय ।
मुणी मुणि कनै भया जागण भैंगयो ॥
गुज्डू कोट माई जागी हरू ज्ञानी खेत ।
उजयाव हणम द्वीये है गई सचेत ॥
आंख खुला महेड़ी का स्वणि आई याद ।
अपणा गोरिया कणी मारी हली धांद ॥
माता का—सांच जै गोरिया हलै हरु बौड़ै ल्यये ।
च्यलौ म्यर मरी जालौ तू माट बुकाये ॥
रुनै ब उड़ानै न्हैगे गोरिया थानम ।
दुखिये आवाज न्हैगे गौरिया कानम ॥
महेंणी लै धर जब गोरिया का ध्यान ।
आंख खुला हरुवा का हृदया में ज्ञान ॥
हरू का आपण मनम हरू करछ विचार ।
क्या कुमति आई कोछ जो छोड़ी हत्यार ।
गुस्स मज हरुवा का आंख हैगो लाल ।
कस करौ आज कौछ बेमौत वे काल ॥
जै लाग हरुवा तब उठाई तलवार ।
कतु लुका चोर जार आई जावो भ्यार ॥
हरुवै की धाद सुणी सबै चौंकि गया ।
मरियकौ जग्योन हैगो सुण म्यर भया ॥
दोनों भाइयों का हिट म्यर ददा अब द्विय भाई जौंला ॥
मारो बेर मोवा सेत हरुवा दबौला ॥
द्विय भाई मस्त करि आई गय भ्यार ।
हरुवा लै थाम हैला ढाल लै तलवार ॥

हम धम हरू हैंनी देखनी तलवार।
हरू पर करी तब लट्ठ बल्टो मार॥
हरू को मार देना ढाल पर रोकी हरू लट्ठ बल्टो मार।
दूसरा हाथ लै हरू चलै तलवार॥
हम धम द्वी भाइयों का सिर काटी गया।
लाश पड़ी जमीन में हँस उड़ि गया॥
जै लाग हरूवा तब खरक भितेर।
सातौ का धम्यलौ थामौ गुस्स भरि बेर॥
घर बड़ा लगै बेर सातौ ल्याय भ्यार।
सात-ओ भौजिया तब है गई लाचार॥
भाभियों का धमेली लै छोड़ि दियो हिठी बेर ओला।
आपणी दिल की तुमू बात लैं बतोंला॥
सेती पाई बे तुम बनाया जंवान।
आज ओ खोजण बैठा हमू हैबे बान॥
तुमर कारण न्हैगे जवानी हमरी।
हमू हबे बान अब को हली दूसरी॥
सबों हैबे बान दयोरा भोट में बतानी।
मालू ओ रौतेली हली दुनिया गाहिनी॥
हना जबा च्यला तुम मालू ब्यवे ल्यना।
मल भोट मज तुम नाम को आन।
च्यला हला मालू ल्यला नतर सियार।
कतु भुक्कि जानी यसा कुकुरै की चार।
तिरियों वचन सुणी हरू कलेजी भै गयो।
गोली का समान लागौ टुकड़ा कै गयो॥

भौजियो लीबेर हरू आय गुज्डू कोट ।
कलेजी में लागी रैछ बचनौ की चोट ॥
हरू का—हाथ जोड़ी माता हणी सिर लौ झुकाय ।
तेरी लौ टहल हणि भौजिया लि आय ॥
तू रहये इजा मैरो येती गुज्डूकोट ।
बचनो कारण आज जानू भला भौ ॥
ब्यवे बेर ल्योंला ईजा औ माल् रौतेली ।
दुनियां गाहिनो हैरैं मालू सौके चेली ॥
माता का हरूवै की बात सुणी हिय भरी आय ।
महेड़ी का आंख मजि सौण झुलि गया ॥
क्यलै मल भोट क्यछ यस काम ।
कूंल बहकाय च्यला केछ वीक नाम ॥
हरू का— हरु कौंछा तब सुण इजा बात लौ बतानू ।
भौजियों लौ बोली मारी कासिक रहनू ॥
माता का माई कैंछ सुण च्यला विचार्दन हठ ।
तुत जालै भोट हणि कोट रल पट ॥
नजा नजा म्यरै च्यला भोटान्ता का देश ।
भौटिया दगड़ च्यलं निपड़नी मेश ॥
जादु का पड़िया रनी विपक भरिया ।
ज्योंन जिया क्वे निलौटा बोंता छै मरिया ॥
निमाननै जब तुम मेरी कै जा मेरी गत ।
तुन गये भोट हणि मेरी है कुगति ॥
जब सुणी हरूवै लै महेड़ी की बात ।
मैं निजानु भौट हणि बहकाई बात ॥

हरु का हरूवै लै मन मज मत्त लै उपाय ।
वामण क पास जाई सुदिन कराय ।।
घर आई बेर हरू महेड़ी नवाई ।
मुनई कटोरी बेर पलंग स्यवाई ।।
बुढ़िया पराण हय पड़ि गई नीन ।
हरूवा ओ हीत अब क्य करू आधिन ।।
हरूवा ओ हीत तब करुछा विचार ।
जण का लिजिया हरु है गोछ त्यार ।।
घ्वड़ा पास न्हैं गेय हरुवा लै हीत ।
सजाण भै गोछ घोड़ी सुणो लिया भीत ।।
सुनहरी जीन धरि चांदी की रकाब ।
सिर में कलंगी माजी घोड़ी क्या नवाब ।।
मोती चूर लगाम ओ घोड़ी पै लगाय ।
घोंड़ी सजी बेर हरू भीतर ऐगय ।।
रेशमी कपड़ पैरा पुतलिया पाग ।
हिय भरी आय हरू मन में बैराग ।।
एक हाथ ढाल थामी एक तलवार ।
विरोधी बांसुरी धरि मन में विचार ।।
इजा कणि हरुवै की पड़ी रैछा नीन ।
हरूवा लै हीत तब क्य करु आधिन ।।
माता से मेरी इजा गुज्डूकोट तू रया निचना ।
म्यर ले लिजिय इजा तु रोये लै झन ।।
सात भाई मरी गया तब इजा छोड़ी ।
मैं पापी निकलौ इजा मैंले ज्योने छोड़ी ।।

मल भोट जानू इजा मालूक परण ।
गुज्डूकोट छोड़ इजा बचनू कारण ॥
हरूवा का आंखों मज सौण झुली रया ।
मन मने मज हरू महेड़ी हैं कया ॥
सांच च्यल त्यर हौंला लौटि घर ओंला ।
झुठौ जै हनल इजा मल भोट रोंला ॥

तासरा अध्याय

हरू का मालु के लिए भोट जाना

हाथ जोड़ी माता हणि हरु हौ तैयार ।
रकाबों में खुट धरी है गयो सवार ॥
घ्वड़ मज बैठ हरू बट लागि गयो ।
वचन कारण हरू मरण हैं गोय ॥
महेड़ी का ध्यान धरि आधिन न्है गया ।
जोव जन्तु गुज्डूकोट झुरण लै गया ॥
हरूवैं की घोड़ी न्हैगे हरण का बट ।
निगलागों वटि न्हैगो गभिणी का घट ॥
तब आई गोछ हरु पितरोंक ध्यान ।
भेट करी जानु कोंछ आपण तिथाण ॥
घ्वण लौटे बेर गय जाँ छिया तिथाण ।
हंसी ढुंगा मज कय अरघ धुपाण ॥
हात जोड़ी हरुवै लै करी अराधना ।
सांच जै पितर हला मैं छोड़िया भन ॥
भौजियों कहण पर मर हण जानु ।
तुम छा पितर म्यरा पुकार कै जानु ॥

मैं मरूला भोट जब बंश मिटि जालो ।
गुज्डूकोट रोजै हूणि बांज हुई जालो ॥
तीथाण मैं ढाढ मारी याद आनी भाई ।
ज्योंन हूना म्यर ददा करना सहाई ॥
फुटिया करम म्यरा आड़ नै आधार ।
भोट में आफत आली सुणिया पुकार ॥
सांच जै तिथाण हलौ पितरों क येती ।
मैं मरूला भोट जब क्यैल ऐजै येती ॥
सबौ कौलै नाम जपी जतु छी मरीया ।
बटलागी गय हरू विरोध भरिया ॥
दुड़ बुड़ी चाल लैंरे मालूक छ ध्यान ।
ब्याल क बखत न्हैगौ भगौती दुकान ॥
बजारा ढांकरी ऐरे घर का लै आया ।
सब वो ढाँकरौं औती जग हैई गया ॥
हरुवा वो हीत कोंछ सुणों सब भ्रण ।
जणी लोग रव्ट दिया अणी गुण चण ॥
गूड़ चण खाया सब खाई हैली रौट ।
उज्याव हणम हरू लागी गोय बट ॥
आखरी खवै छ मेरी नक भन माना ।
बिखिलौ मुलुक जानू ज्येकौला भगवाना ॥
घ्वड़म सवार हय गाड़ी है मुरली ।
विरोधी बांसुई हरु कलेजी कोरलो ॥
हरुवे वांशुई बाजी डौणिया का आम ।
बगड़ा में चारों गौका सैणी लैरैं काम ॥

विरोधी वाशुई बाजी कानों पड़ो रैण ।
सब सैणो धोक लैगीं राड़ छोडी देंण ।।
औरत का धन-२ बिचरा तू धन माई बाब ।
कलेजी विरोध लैगौ कसो रनु आब ।।
हरुवा यो हीत कौंछ सुणौ मेरी बात ।
बिख कीं भरिया रैंछ तिरिय की जात ।।
हरू का दोहा तिरिया ऐसी मोहनी, अवगुण हैं ये तीन ।
पर मन पर धन हरन को तिरिया बड़ी प्रवीन ।।
यतु कई बेर हरु घ्वड़ लै दौड़ायो ।
कढोई का तला पना हरूवा ऐ गयो ।।
कवि का भिकुवा मंच्याड़ी छीय भिक्यासैण मज ।
चार पट्टी मालिक छा भिक्यासैंण मज ।।
घट तैंक बोंया हल कुकुर खात्खुली ।
सात छैं बैशुवा तैंक जतिया मारखुली ।।
हरुवै की घोंड़ी न्हैगे कढोई तल पन ।
खल बली मची रैंछ भिक्यासैंण पन ।।
दौड़नै एगय तब जतिया मारखूली ।
भुकण भै गय तब कुकर खात्कूली ।।
हरुवै की घोड़ी ऐगे भिक्यासैण पार ।
तब तक द्वीये ऐगी गगासा किनारा ।।
हरुवे नजीक तब द्वीये आई गया ।
घोड़ी में वे तब हरु समजण मैं गया ।।
हरू का निकय कसूर मैंले निकय अनाण ।
निओं तेरा भिकयासौण नितरु में गाण ।।

कतुक समझाय हरु निमानना बात ।
जै लागौ जतिया तब असुरै की जात ॥
गुस्स मज हरूवै लै उठाई तलवार ।
मारौछा जतिया तब टुकड़ा लै चार ॥
चारौ दिशा हंणे फैका टुकड़ा लै चार ।
कुत्ता मारी बेर फेकौ भेकुवा का द्वार ॥
आघिन लै जाई बेर घट जो तिड़छा ।
हरु कणि देख बेर वैलै तिड़फिड़ कौछा ॥
जै लागौ हरुवा तब घट पाट फोड़ौ ।
टोड़ी टोड़ी वेर वैलै वगाय फितड़ौ ।
भिकुवा भंच्याड़ि कणि पुजिगे खबर ।
मार मार कनै न्हैमौ वैसुओं का घर ॥
भिकुवा मंच्याड़ि कौछ सात वेस्यों हैती ।
कसा बैठी रजा तुम क्य बिगड़ी मति ॥
शतुरै लै येती अब करि है चौपट ।
जतिया कुकुरै मारी फोड़ि हैछ घट ॥
यतु बात सुणी सातै न्है गई बटम ।
बाटौ रोकी बात कनी अटम सटम ॥
भिकुवा भिकुवा लै धादै मारी चारों पट्टी मज ।
येती आई रौछ आज गुज्डूकोट रज ॥
बजा गजा लिई वेर लठ बल्टा ल्यायो ।
ऐतो आई हरुवै की बुति करि जावो ॥
भिकुवै को बात सुणी सब जिमीदार ।
बड़ा गजा लीई बेर है गया तैयार ॥

हरु का कहना आपण मनम हरु करुछा विचार ।
वार पार सब आज [illegible] है रै तयार ।।
भिक्यासैण मज आज के कौतिक हल ।
हल चल मचो रैछ पड़ी रैछ रौल ।।
वार पार लोग सब जम हुई गया ।
हरू कणि मारो कनो चिलाण भ गया ।।
सब लोग देखी जब आवाज लै सुणी ।
मन मज हरू कौछ आई गेछ हुणि ।।
ऐसी सोची मन मज कस हय हाल ।
कसि जानू भोट हणि ऐती ऐगो काल ।
अपण मनम हरु सोचण भै गया ।
यों ऐ रयीं निरा निरी चुपाण के हय ।।
देवी क सुमिरण करि गोरियक ध्यान ।
मेरी लै मदद कय मांगनू वरदान ।।
दुधारी तलवार थामी गेंड वाली ढाल ।
गुस्सा सजि हरुवें की आंख हैगी लाल ।।
सातै वसू मारी हैगो घुसि गो बाजार ।
खटा खट हरुवी लै चलै दी तलवार ।।
लड़ना चौतरफा घोड़ी नाची हैगो हाहाकार ।
लाशों की त ढेर लागे खून की लौ धार ।।
आधा जिमीदार मरा आधा भाजि गया ।
मच्वाड़ि का वंश मज एक लै नि रया ।।
भिकुवा मच्वाड़ि छोड़ी चौपट है सब ।
करिये आखर गोछा लौटि ओला जब ।।

सब को मारना घोड़ी का सिरम पड़ै महाकाली जाप ।
गगासा का बट हरु नसी गय साफ ।।
मार मार कनी हरु लुत लेख गया ।
हाथ जोडि हरुवे लौ गौरिये हैं कया ।।
हरू को भोट जिति वेर जब माल् ब्यवे ल्योंला ।
द्वी जोंवा हिनोला तब ते कणि चड़ोला ।।
हरुवै की घोडी न्हैगे वागेश्वर जब ।
हाथ जोडि अराधना हरु कोंछ तब ।।
मालु जिति राजी खुशी लौटि वेर ओंला ।
सुन क कलश स्वामी जरूर् चड़ोंला ।।
आराधना करी हरू बट लागी गयो ।
दान पुर जुहार बटि तक्लाकोट गयो ।।

हरू का तल्लाकोट में

तक्लाकोट बटी लैगी विदेशी मुलुक ।
अब छुटी गोछ घोड़ी आपण मुलुक ।।
तुई मेरी इजा, बवा तेरा छा भरोसो ।
जनी जाली मेरी घोड़ी विख न बरसौ ।।
एतु वात कण मज घ्वड़ वैठि गय ।
घ्वड के वैठण मज भारी दुख हय ।।
[illegible] के विगड़ी जो तू है बीमार ।
भाग [illegible] पढ़ [illegible] में पिलार ।।
वाना वानो [illegible] हर पडि गई रानी ।
ईश्वर [illegible] आँ [illegible] रचि वाल ।।

रात देखि रर हरू घोड़ी है तैंयार ।
ईश्वरो को नाम लिगो हरूवा सवार ॥
पैली रात चीन कूद दूसरी कोचीन ।
तिसरी व रात घोडि लख महाचीन ॥
येतो बटि लैगो घोडि हुणियों को देश ।
दिन हणो छिपी जानी रात परवेश ॥
चौथी रात हुणियाँ का पांचों घ्वड़ मुख -
परदेशी जीव छिय भारी मिल दुख ॥
छटों रात घोड़ी न्हैगे खास श्रो भोटम ।
बस्ती छोडि बेर भाई जंगल बोचम ॥
वोती लक हलो हरू देवीक भवन ।
देवीको भवन देखी खुशी हैगो मन ॥
हरू का भवन भीतेर हरू लागिगे नजर ।
अरघ धूपाण हैरौ फूलों झर फर ॥
अरघ घुपाण कय हाथ जोड़ि ध्यान ।
परदेशी जीव छौं मैं मागनू वरदान ॥
मेरो रक्षा करि दिये भोटियों बीचम ।
विलिख मुलुक माता रहिये संगम ॥
अष्टबली देई जोंला वचनो श्राधीन ।
देवी पूजा करि बेर पडि गई नीन्द ॥
नेमधारी चेलियों क रोजै छिय नेम ।
नाण धुण देवी पूजा रातो पर टेम ॥
मालू का पूरव उज्याई मजि मालु है तयार ।
नाइ धौई बेर मालू करो गै श्रृंगार ॥

अरघ धुपाण लिबै मालु नसी गेछ।
देवी का भवन मज अराधना कैंछ॥
मैं कौंछिय सांचि हली तू रहैछ झुठि।
बार वर्ष पूजा कंबे तु क्य लक रूठि॥
आखिरी की पूजा मेरी सुणिये अरज।
मन कसौ बर दिये य तेरौ फरज॥
पाली पछौं रज हवो भारी बलवान।
तीन दिनैं माल हैंछा जाती बै निदान॥
मालुकी लै ध्यान वैरों देवी पूजा मजा।
बचनों आज न्हैगे हरू कानों मजा॥
हरू का खड़ौ हुई गयो हरू वांई यो बुरज।
पूजा करी मालु लौटि जसी उ सूरज॥
मालु का मालु को नजर लैगे हरू पर जब।
चक्कित है गिरि गेछ मन्दिर में तब॥
हरू का- मालु की हालत हरू देखीये रैगयो।
मालु पतौल्यूल कौछो ये कणी क्य हयो॥
मालु की सूरत हरू देखिये रैगया।
आंखो में चक्कर आय आफू गिरी गयो।
थोड़ी देर मज हरू होश आई गई।
इतर सुगन्ध छड़ी मालु होश आई॥
मालु का-हरू कणि देखि मालु बड़े हर्ष हयो।
फिर लै मरद छिय हरूवै लै कयो॥
हरू का—कोछे त्यर मैंति गीति क्यछ तेरौ नाम।
देवी का भवन मज क्यछ तेरौ काम॥

मालु का—मालु कैंछ सुणि लिया बात लै निदान ।
बार वर्षं पूजा करी देवी है बेमान ॥
भारी खानदान की छौ कालु सौके चेली ।
दुनि मेरौ नाम जाणू श्रो मालु रौतेली ॥
आपण लै पतौ सब बतै दियो बाम ।
के तुमरौ जात हली के करछा काम ॥
हरू का—यतु बात सुणी हरू करुछ सवाल ।
देवी ता निरूठी मालु देवी है दयाल ॥
सारै ख्वल ते सुश्रानू लग तागै बटि ।
जिला श्रलमोड़ा मेरो सल्ट तल्ला पट्टी ॥
चार पट्टी मालिक छों गुज्डूकोट थात ।
हरूसिह नाम हयो हीत मेरी जात ॥
बौरड़ा लें कुणखेत गगन मण्डल ।
कमें बौर धरी जानी जमीदार भल ॥
त्यर लै कारण मालु कस ध्वक पाय ।
देवी ले दयाल हैछ जौले यां मिलाय ॥
मालु का—हाथ जोड़ी मालू कैछ बात सुणौ म्यरा
द्विय भ्रण नसीं जोंला देश ले तुमरा ॥
हरू का—हरू कौछ सुण मालु कसी तेरी मति ।
सौरासी निदेख मैंले एति त्यरा मैति ॥
चोरी वेर ते लिजोंला मेहणी धिक्कार ।
दुनिया का मैं वतैंला सबै चोर जार ॥
मालु का—मालू कैंछा निमानना मैं जै श्रानु घर ।
घर जाइ मालु ल्येगें विद्या कौ लै भार ॥

पड़ि हलो जादू मालु चलात मन्तर ।
मखो बने हरू धरौ डिबिया भितेर ॥
भवर बनाय ध्वड़ आकाश उड़रय ।
स्वामी का डिविया मालु धम्येली दबाय ॥
घर आई बेर मावू सचेत बनाय ।
आपण लै दुख सुख छियौ लौ लगाय ॥
मालु कैछ सुणौ स्वामी झन करा हट ।
कभैं झन जया तुम दक्षिण का बट ॥
यतु कवौ मालु न्हैगे धुमण बाजार ।
दक्षिण भरोकि खोलि मन में विचार ॥
हरू का—झरौकी लै झन खोला मालु क्यलै कैंछ ।
अजमैंस करी आनु जांलौ मालु ऐछ ॥
दक्षिण झरोकी बट न्है गोयो बाजार ।
सात बैंणी गगला कैं विद्यानो का भार ॥
गंगला संगला सात बैणी अलबेली ।
जादू का पढ़िया हैंला मालु कैकी चेली ॥
गंगला का—सातों लै बैठाय हरू सुतारी पलंग ।
कसी बात कनी तब हरूवा का संग ॥
गंगला को नाम भुला मालु घर गया ।
मालु घर क्यलो गया कैल बहकाय ॥
तुमरा कारण न्हैगे जवानी हामरी ।
मैं हबैर बान अब को हली दूसरी ॥
हरू का—गंगला हैं हरू कौंच सुणौ मेरी बात ।
मकणि त्र क्य छलली तिरिया की जात ॥

मेरी लै सामणी तेरी निचली अकल ।
मालु हैवे और कैकी निदेखु सकल ।।
गंगला का— गुस्स मजि भरि बेर गंगला नसीगे भितेर ।
बंगालौ को चेड़ा लिवै मन्त्र पढ़ि बेर ।।
नंग छड़ जादू हरू नसीगो सिराण ।
लाश पड़ि रगे हरू उड़ि गौ पराण ।।
बगस में बन्द करौ लिन्है गेछ लाश ।
खड्डु खोदी खड़ें दिय बगीच में खास ।।
सात बेंणी खुशी हैरै हैगे झर फर ।
बाजार घुमण वटि मालु ऐगे घर ।।
मालु का—भितेर चहाय हरू निदेखौ मालिक ।
कयलें गया स्वामी मेरा के बिगड़ी लीक ।।
दक्षिण झरौखी पर लागि गे नजर ।
खुलिया झरोखी देखी हैई गे फिकर ।।
मैं जाणनू गंगा हात मरिगे बेकाल ।
रूनें-२ मालु तब फोड़िछा कपाल ।।
रूनें-२ मालु कणि तीन दिन हैगी ।
उज्याव हणम तब स्वामी स्वेणा ऐगी ।।
हरु का—कां जौंला आपण देश रैंगो तेरा भोट ।
सतुरों का घर गग झन होयो चोट ।।
तेरा लें बगीच मज खड़े रयू खाड़ ।
अन्न खये पाणि पिये झन भारे डाड़ ।।
तेरो मेरो आपस में द्वि दिनो क योग ।
मरै हँणि भोटा आयौ झन कये सोग ।।

मालु का—झट स्वीण मज मालु एक बम जागी ।
फावड़ कुटव लिवौ बगीचा जैलागी ॥
खड्डु खनी बेर मालु खौलछा बगश ।
घोई कसि फाट तब देखि हैछ लाश ॥
लाश लैं पकड़ि मालु लिन्है गेछ घर ।
जादू पढ़ि बेर मालु उतार जहर ॥
चेतन हैबेन हरू राम राम कय ।
हरू कणि देखि बेर मालु हर्ष हय ॥
हरु का—हरु कणि ऐगे तब गंगला की याद ।
गुस्स मंज भरि बेर मन में बिखाद ॥
सुणा मेरी मालु कोंछा ल्या मेरी तलवार ।
मैंले देखि ग्रानू मालु भोटियों बाजार ॥
हरू मालु ग्रापस में बात कनी जब ।
चौकीदार बातों कणि सुणि रय सब ॥
चौकीदार का-मार-२ कनै न्हैगो कालु सौके पास ।
चोर ग्राई रौछ कोछ त्यर घर खास ॥
कालु सौक का कालु सौकेले जब एति बात सुणी ।
कांक चोर ग्राय कोछ कैका ऐरे हुणी ॥
फौज सजौ बेर कालु ढाल ली तलवार ।
जादू का बट्व लिवौ घाड़ीं में सवार ॥
भोटियों पै लागी गेछ मालु की नजर ।
तब हैगे मालु कणि स्वामी की फिकर ॥
मालु का मालु कैछ सुणौ स्वामी यौ हैगै ग्रन्धेर ।
त्यर बाब ग्राई गोछा फौज सजै बेर ॥

तुम थामो तलवार मैं पढ़नू जादू ।
तब कयो कालु च्येलो जब भोट सादू ॥

घबराया झन तुम धरिया धीरज ।
स्वामी की मदत कणी नारी कौ फरज ॥

हरु का लड़ना—छत्री बंसी च्यलौ छियौ पड़िगो रणम ।
शेर जसौ पड़ि जांचा हिरणों बणम ॥

रण मज कुदी घोड़ा हैगे हाहाकार ।
एक कणी हरू मारों घोड़ी मार चार ॥

भोटियों लै हरू पर करी जादू मार ।
मालु का मन्तर भज निवासिनी पार ॥

रण मज भोटियों का हरूवा जवान ।
लड़ण भैगोछ तब चंडी का समान ॥

कालू शौक मारी दिया फौज सब मारी ।
लाशौं की तौ ढेर लागी खून गंगा भारी ॥

भोटियों का—बांकी जो भोटिया छिया करनी अरज ।
मालु ब्यवे बैर लिजा भितुरी फरज ॥

यतु बात सुणि बोर हरु लौटि गय ।
सूर वीर मरी गय पैक क्वे निरय ॥

हरु का—मालु हैती हरू कौंछ सुण मेरी बात ।
स्वीणा मजि इजा देखि बेलिये की रात ॥

हिट मेरी मालु अब द्विय झण जोला
गुज्डूकोट जाई मालू इजा सेवा कोला ॥

मालु का—मालु कैछ मौंति बिना है गाय अनाथ ।
भोटक लै धन माल लादौ सब साथ ॥

हरु का—घ्वड़ौ लै बकरौ अज करि है लदान ।
भोट कौ लै धन माल लादौछा समान ॥

यात धन भोट मजि या तलि बतानी ।
य देश निर्धन भया रंगीलौ बतानी ।।
द्विय भ्रण नहै गया देवीक भवन ।
हाथ जोड़ि हरूवें लै करी अराधना ।।
अष्टबली दिण कैंछौ दिया एक सौ आठ ।
खेड़ा व बकरा लिबौ लागी गया बटा ।।
हरू का—मार मार कनौ द्वीये ऐगी बागेश्वर ।
तीन जिलों मज हरू दि हैछ खबर ।।
नामी नामी जो सुनार बागेश्वर आया ।
छतर कलश तुम गड़ी लक जया ।।
बागेश्वरा सुनारों की खुलिये दुकान ।
स्वरणों की ढेर लौगे देखि लौ हैरान ।।
बागनाथ को—छतर कलश चढ़ै श्री बागनाथ ।
दिये भ्रण सेवा कनी जोड़ी बेर हाथ ।।
मार मार कनैं अब लुतलेख आया ।
द्वी जोंवा हिनोवा हरू गोरिए जड़्या ।।
लुतालेख—डिबरा बकरा न्हैगी बांसुई का स्यरा ।
पदुवा द्वर्याव कणि मिलिगे खबरा ।।
पदुवा का—पदुवो लौ धाद मारि चारों पट्टी मजा ।
स्यर म्यर बांज कैहै कैंकी ऐ जा कजा ।।
चारों पट्टी लोग ऐगी पदुवा का संग ।
बांसुई का स्यर तब उठ गयो दंग ।।
हरु का—मालू लौंत जादू पड़ हरूली तलवार ।
लाशों की तौ ढेर लागे खून की लैं धार ।।

आधु मरा आधु भाजा पदुवा रै गयो ।
कुला का कुल बान पर पदुवा दबायो ॥
मार मार कनै तवा आया भिक्यासैण ।
भिकुवा का कानों मंज पड़ि गई रैण ॥
भिकु का हाथ जोड़ि कोंछ धन मेरा भाई ।
सात खजों मज फिरी य तेरा दुहाई ॥
चैंता का मैंहैना गयु सौण लौटि आय ।
भोट जिती मालु ब्यबै नाम्र कमै आय ॥
बकरा ढिबरा ल्हैंगो घ्वड़ौ कौ लदान ।
भिक्यासैण बटी बाबू भगोती दुकान ॥
पछिन दुकान रैगो आधिन गर्भिणी ।
घर कणि माई पर लगीगे हंसिणी ॥
माता का—हाय हरु-२ कनै कंठ में पराणा ।
कसिक देखनू कैछ उड़नी पराणा ॥
तब तक आई गई हरुवै खवरा ।
मालू ब्यवै ल्यगो ढिबरा वकरा ॥
महेड़ी का कंठ मजि प्राण लौटि आय ।
म्यर जै हरुवा ऐगो देवी है सहाय ॥
उठिगे महेड़ी तव हय माया जाल ।
भूलि गेछ दुख मुख, भुलि गेछ काल ॥
ढिवरा वकरा छोड़ि दिय आया घर ।
च्यला ब्वारो पर आव लागि गे नजर ॥
च्यला ब्वारी भकि लिवी मां करीछ प्यार ।
दुनियां में नाम रैजो धरती की चार ॥

घ्वड़ौ व बकरा का लै उतरौ लदान।
गुज्डुकोट जम कय भोटो को समान ॥
राजी खुशी भादों न्हैगों असौज लै गयो।
कातिक महैन अब माता हैती कोय ॥
मालू झन जाण दिये भौजियों दगड़।
बिख का भरिया छैं यों करील झगड़ ॥
घवड़ लै बकर लिबै भाबर न्है गयो।
सुणि लिया भाई लोगो आघिन क्य हुय ॥
कवि का—अर का बकरो खाई मालू हई रई।
मन मज हरुवा का भौजि जाई रई ॥
तिसरा दिन की बात सुणिया जिगर।
जौ दिन हरु लौ आणौ भावर बै घर ॥
कपड़ धुहणि गय बौराणिया सात।
हंसि ढुंग मज तब कसी हनी बात ॥
भाभियों का—सातों का आपस में यस मत हयो।
जहां लक हरू आंछ मालू मारो कय ॥
अंबाई का पंख मालु बकरौ की ग्वाई।
सातों लौ लगंछ धाद मालु लौ बुलाई ॥
भोट की रणिया हई निदेखा ओ मंछा।
कस हनी मिरगा यां कस हनी मछा ॥
आई जौछ हुणि जब बैठि जों कुमति।
अंबाई का बख बटि मालु ऐगै वोति ॥
मछ जै चहौंल कछी सातों लौ पकड़ी।
मन मनौ मालु कैंछ ऐगे मेरी घड़ी ॥

मैं माफी मांगनु कैछ सुणौ मेरी द्विदी ।
छोड़ौ कनै रामा मालु पर विति ॥
भाभियों का—निरदई भौजियों लै रौउ डुबै हैछा ।
हंस उड़ि गयो मालु लाश पड़ी रैछ ॥
भाबर बै घ्वड़ा मज हरू हो सवार ।
मार मार कनैं हरू आयो कोसी पार ॥
हरु का—हरुवै लै गाड़ी तब विरोधी बांसुई ।
खट खट खट खट लागि गे भांदुई ॥
भादुई लागण मज मालु ऐगे याद ।
बायी आँख फड़िक गे मन में बिखाद ॥
माम-२ कनै हरू आय गोय घर ।
हाथ जोड़ि माता हणि पूछुछ खबर ॥
भौजी सातैं आगी इजा मालु कती गई ।
दिन यौ आखरी ऐगो मालु लै निअई ॥
मालु की खोज घोड़ोम बैठुछ हरू न्हैगो खोजण ।
बार बांट बकरौ का हइ रइ वण ॥
हरुवै मन मज लगाय विचार ।
मालु मन निआय कि म्यर घर वार ॥
मालु नहै गेछ जाणी आपण लै मैत ।
लोटैं बैर ल्यौंल कौंछ यौं घड़ी सैत ॥
मार-२ कनै न्हैगो भगोती दुकान ।
रात पड़ि गेछ तब धरि लिया ध्यान ॥
हरू कणि नीन पड़ि उज्याव हणम ।
सिराण में मालू बैठि स्वपना रथमा ॥

मालु का स्वप्न में हरू हति मालु कैछा हाथ जोड़ि बेर ।
कत्री जोंला भोट हूणि मैत मरी बेर ॥
मैति गोति मारी बैर है गेयु अनाथ ।
अब छुटि गौछ स्वामी तुमरौ लै साथ ॥
निगयं मैं मैत हणि निछै मैति गोति ।
रोका तवा डुबै हैलू तिथाण छ जति ॥
सातौ लै ओ मत करो मैं डुबाय गाड़ ।
झन कया म्यर शोक झन मारा डाड़ ॥
उड़ि गय म्यर भोग मरी गया खैर ।
म्यर लै कारण स्वामी झन करा वैर ॥
ब्या करिया म्यर स्वामी करि लिया ऐस ।
म्यर शोक झन करिय नी धरीला मैस ॥
हरु का जागना यतु बात सुणि हरु टुटि गेछ नीन ।
हरुवा व ह्रीत अब कय करु आधिन ॥
हाय मालु २ कनै धवड़ा लै लौटाय ।
मार-२ कनै अब हंसि ढुंग आय ॥
हँरुवै नजर लैगे रौका तला हुना ।
मुखड़ी कै तप मालू पुन्यों कसी जून ॥
हरू का हरुवै डुब मारी मालू गाड़ी भ्यार ।
हरु कीछा हाय मालू बिन मौतै मरी ॥
विलाप यो म्यर लिजिया मालु त्वीलै कसी करो ।
तु म्यर कारण मालु बिन मौत मरी ॥
मारी बेर गङ्गला लै में खड्यै दो गाड़ ।
मरिया कौ ज्यौन कय मारी मारी डाड़ ॥

जादू पड़ि बेर मालु भोंटियों बीचम ।
म्यर लै कारण त्वील्लै मैति कै खतम ।।
मैं मरनौ जब मालु तू बचानी आज ।
तू मरीगे गुज्डुकोट करी गेछै बांजि ।।
एक ओ घागरी मिजि दूसरो छी कोरी ।
मिजिया-घागरी खोली छातो पोटी खोरी ।
हंसी ढुंगा मज हरू धरीछ सुकाण ।
घागरी का छाप ओति आजि ले पछाड़ ।।
हरुवा बदन मजि लागि गेछ आग ।
सबों मारी बैर गिनाय सानण ।।
जंगल में जाई बेर गिनाय सानण ।
जम करी आय हरु जां छिय तिथाण ।।
मार-२ कनै हरू गुज्डुकोट आय ।
कलेजी में लागी रैछ बिरह की चोट ।।
सातों धम्योंली धामी खींची ल्याय घाट ।
ज्योंन धरि चित्त मजि पड़ीगो चिचाट ।।
सातै कै भसम कै लै घर कणि आय ।
हाथ जोड़ि माता हति हरुवैं लै कोय ।।
हरु का—सांची जै महेड़ो हली छोड़ियै पराण ।
तेरी गत मैं कै जोला जां मेरी तिथाण ।।
मालु मरी गेछ इजा मैंले जानु सात ।
पछिन मरली जब है जाली कुगत ।।
सतवन्ती हाई कै बे छोड़िछ पराण ।
माता कणि सिर धरी लीगयो तिथाण ।।

माता का—महेड़ी का चित्त साल लगैं हैछ आग।
तिलाजली दिई वेर बने हैछ खाग ॥
हरु का—दक्षिण घवड़ौ को चित्त आपण पूरब।
अपण हातलौ हरु भस्मा कै सब ॥
सब का भस्त होना मालु गोदी थामी हरु हैगोछ भसम।
हाय राम हाय शिव सब है गय खतम ॥
कवि का—मालु का कारण भया मरी गैं इगार।
गुज्डुकोट बांज हैगो लैगई दुहार ॥
कैक झन हवौ भया यस निर भाग।
नारी लै पुरुष सब हैई गई खाग ॥
नाम लै अमर हैजो धरती की चार।
महेड़ी वचन छियो करिया विचार ॥
ज्योंन छियौ हरुवौ को बड़ नाम हय।
मरी बेर धन हरु कस नाम रय ॥
जयोंन जियः हरु हय गुजडुकोट रजा।
मरी बेर हय हरु कोटनिकौ रजा ॥
आपण इलाक मजे भिरुछ तमान।
फौज ओ फरहर संग सबै लै समान ॥
जग-२ मन्दिर छैं घाट घाट पूजा।
न्याय कौ निसाप कौंछ काम निछ दूजा ॥
सब जग बटि जब है जानि निरास।
अरज लिबेर तब आनो त्यर पास ॥

जैक लै कसूस देख जांछ तीका घर।
य त्वीलै कसूर कौच दि द्यूला खबर।
चौरी लै साबित कोंछ घर जाई बेर।
माल लै वापिस कोंछ धमकाई बेर॥
रिपोट करनी जब त्यर दरबार।
निशाप करछै रजा नाम छा संसार॥
धन २ रजा तुम धन तेरी माया।
कसा कसा च्यला हथा यसा क्वे निहया॥
अपण इलाक मजि फिरूछा निडर।
मेरो बाटो भन रोका दि द्यूछा खबर॥
कोटिन कौन गस्त त्यर भोट तक जांछ।
लौटि बेर कोस्यां नवा भावर लै आछ॥
आपण इलाक मजि हैरौ छ मशहूर।
निलागू कैपर कोंछै बिगर कसूर॥
कनुकों लै जाई बेर अजमेस करी॥
तेरी अजमत देखि लोग गया डरि॥
धन ओ महेड़ी जैलै दो दिया बचन।
दुनियां में नाम तेरो रैगो सनातन॥
हरुवे किनात. मन दुखि रैगे भाई।
साधिना ओ मरवेता है लये मद्दाइ॥
पहरा आ बनाई दीन किताब तयार।
भारत के हर होन मनवन्ती नार॥